लड़ते बकरे और सियार-पंचतंत्र

एक दिन एक सियार किसी गाँव से गुजर रहा था। उसने गाँव के बाजार के पास लोगों की एक भीड़ देखी। कौतूहलवश वह सियार भीड़ के पास यह देखने गया कि क्या हो रहा है। सियार ने वहां देखा कि दो बकरे आपस में लड़ाई कर रहे थे। दोनों ही बकरे काफी तगड़े थे इसलिए उनमे जबरदस्त लड़ाई हो रही थी। सभी लोग जोर-जोर से चिल्ला रहे थे और तालियां बजा रहे थे। दोनों बकरे बुरी तरह से लहूलुहान हो चुके थे और सड़क पर भी खून बह रहा था।

जब सियार ने इतना सारा ताजा खून देखा तो अपने आप को रोक नहीं पाया। वह तो बस उस ताजे खून का स्वाद लेना चाहता था और बकरों पर अपना हाथ साफ़ करना चाहता था। सियार ने आव देखा न ताव और बकरों पर टूट पड़ा। लेकिन दोनों बकरे बहुत ताकतवर थे। उन्होंने सियार की जमकर धुनाई कर दी जिससे सियार वहीँ पर ढेर हो गया।

सीख :लालच से प्रेरित होकर कोई भी अनावश्यक कदम नहीं उठाना चाहिए और कोई कदम उठाने से पहले भलीभांति सोच लेना चाहिए।

अनुवाद - कुलदीप धर

लड़ते बकरे सियार

एक दिन एक सियार गाँव से गुज़र रहा था। उसने गाँव के बाज़ार के पास लोगों की एक भीड़ देखी। कौतूहलवश वह सियार भीड़ के पास यह देखने गया कि क्या हो रहा है। सियार ने वहाँ देखा कि दो बकरे आपस में लड़ाई कर रहे थे। दोनों ही बकरे काफ़ी तगड़े थे इस लिये उन में ज़बरदस्त लड़ाई हो रही थी। सभी लोग ज़ोर ज़ोर से चिल्ला रहे थे और तालियां बजा रहे थे। दोनों बकरे बुरी तरह से लहुलुहान हो चुके थे और सड़क पर भी खून बह रहा था।

जब सियार ने इतना सारा ताज़ा खून देखा तो अपने आप को रोक नहीं पाया। वह तो बस उस ताज़े खून का स्वाद लेना चाहता था। सियार ने आव देखा न ताव देखा और बकरों पर टूट पड़ा। लेकिन दोनों बकरे ताकतवर थे। उन्होंने सियार की ऐसी कर पिटाई कर दी जिस से सियार वहीं ढेर हो गया।

सीखः लालच से प्रेरित होकर कोई भी अनावश्यक कदम नहीं उठाना चाहिए और कोई कदम उठाने से पहले भली भाँति सोच लेना चाहिए॥

अनुवाद - कुलदीप धर